"An Analytical Study of Educational and Social Works of Seva-Bharati"

''सेवा—भारती के शैक्षिक एवं सामाजिक कार्यो का विश्लेषणात्मक अध्ययन''

पी—एच.डी. शोध—प्रारूप

उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मान्य विश्वविद्यालय,
गॉधी विद्या मंदिर, सरदारशहर

शिक्षा विभाग

शोधकर्त्री

श्रीमती राकेश मोंगिया कालरा

निर्देशक

डॉ. दिनेश कुमार, प्राचार्य
बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सीटीई)
गाँधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर (राजस्थान)

सत्र 2016

शोधकर्त्री :– **श्रीमती राकेश मोंगिया कालरा**
संस्थान का पताः– **उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मान्य विश्वविद्यालय, गाँधी विद्या मंदिर, सरदारशहर (राजस्थान)**
शोध विषयः– **"An Analytical Study of Educational and Social Works of Seva-Bharati"**
''सेवा–भारती के शैक्षिक एवं सामाजिक कार्यो का विश्लेषणात्मक अध्ययन''

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति में मानव जीवन यात्रा के लिये चार पुरूषार्थों धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का पालन करते हुए सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करने की परम्परा रही है। हमारी प्राचीन सामाजिक व्यवस्था में भी चार वर्णो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ओर शूद्र को प्रमुख माना है। मध्यकाल में भारत के इस सामाजिक वर्ण व्यवस्था में विषमता उत्पन्न हो गई जिससे समाज में जातिगत भेदभाव, छुआछूत की स्थितियां बन गई। परिणामस्वरूप समाज के उपेक्षित, वंचित, अभावग्रस्त लोगों का जीवन दुभर होता गया। समाज का स्वर्ण तबका इन लोगों को हेय दृष्टि से देखने लगा।

1947 में देश की आजादी के बाद भी स्थितियां बद् से बद्तर होती गई। सेवा, संस्कार, समरसता, स्वावलंबन एवम् आदर के भावों का पतन होता गया। मैं प्रतिदिन समाचार पत्रों में अथवा टी.वी. न्यूज से देश में होने वाली विभिन्न असामाजिक घटनाओं की जानकारी लेकर तिलमिला उठती थी। कभी उस दलित वर्ग के लिए दिमाग परेशान होता तो कभी उन बालिकाओं के लिए जिन्हें उनके अधिकारों से वंचित रखा जाता या अमानवीयता की शिकार हो जाती। पतन की हद् देखिये कि बालिका को जन्म से पूर्व ही समाप्त किया जाने लगा।

ऐसी स्थितियों में कंधे पर प्लास्टिक का बोरा लिए, पुराने चिथड़े शरीर पर लपटे हुए, नंगे पैर, बहती नाक और रूखे बालों में नन्हें बच्चों को कचरे के ढेर से कुछ बीनते हुए प्रातःकालीन सैर पर जाते समय कई बार मैंने देखा। मन उद्वेलित हो जाता, दिमाग घंटो परेशान रहता, तभी एक दिन एक साधारण सी दिखने वाली स्त्री जो कि पढ़ी लिखी एवम् संभ्रात परिवार से

थी, ऐसे कचरा बीनने वाले बच्चों को रोककर उन्हें समझाते हुये देखा, तो मैं अपनी उत्सुकता रोक नहीं पायी। निकट जाकर मालूम किया तो पता चला कि यह महिला इन बच्चों से उनके बारे में जानकारी हासिल कर रही थी एवम् स्नेहिल हाथों से उन्हें सहला रही थी। यह देख मेरी उत्कंठा और बढ़ गई और मैं सैर छोड़ कर उस महिला के साथ हो ली। उस भद्र महिला का नाम विमला कुमावत था और वह इसी प्रकार जानकारी लेकर, फिर उन बच्चों के घर जाती उनके माता–पिता को विश्वास में लेती समझाती और अपने घर पढ़ाने हेतु ले आती। तब सेवा भारती नामक संस्था के प्रयासों से इन बच्चों को पढ़ाने के लिये स्थान प्रदान किया गया। आज यह एक बाल विद्यालय के रूप में करीबन 400 वंचित बच्चों के लिए निःशुल्क शिक्षा का केन्द्र बना हुआ है। सेवा भारती के कार्यों को अधिक समझने की जिज्ञासा ने ही मुझे अपने शोध का विषय **''सेवा भारती के कार्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन''** चुनने का नजरिया दिया। मुझे लगा कि इस शोध से मैं सामाजिक सरोकारों को एक माला में पिरोकर राष्ट्र के सम्मुख रख लूंगी।

अधिक जानकारी प्राप्त करने पर ज्ञात हुआ कि प्राकृतिक आपदाएं अकाल, भूकम्प, सुनामी, अतिवृष्टि, बाढ़ महामारियों के साथ सेवा, संस्कार हेतु, सेवा भारती कार्य कर रही है। जिनमें प्रमुखतः निःशुल्क सेवा प्रकल्पों में संस्कार केन्द्र, सिलाई केन्द्र, कम्प्यूटर सेन्टर, चिकित्सा शिविर चिकित्सा केन्द्र, दवाई वितरण केन्द्र, सामूहिक विवाह, नेत्र ज्योति केन्द्र, चुग्गा केन्द्र पक्षियों के लिये, तुलसी पौध वितरण केन्द्र, मातृ छाया केन्द्र, कन्या पूजन, स्वयं सहायता समूह, निर्धन मेधावी छात्र सम्मान, भजन, सत्संग केन्द्र, योग केन्द्र, भोजनशाल, हॉस्टल व्यवस्था, विश्राम–गृह, स्वास्थ्य चेतना, महिला स्वास्थ्य जागरूकता अभियान, वृक्षारोपण, महापुरूषों की जयन्तियां व पुण्यतिथियां पर आयोजन, जन्माष्टमी उत्सव, संस्कृति ज्ञान परीक्षा, स्वाइन फ्लू काढ़ा वितरण, स्वच्छता अभियान, यज्ञ, वाल्मिकी जयन्ती, प्याऊ, चल चिकित्सालय, सेवा भारती बाल विद्यालय, कैदी सुधार, विधवा पालन योजना, शव वाहन, झोला पुस्तकालय, गौ सेवा आदि है।

उद्देश्य–

प्रत्येक शोधकर्ता का अपना उद्देश्य होता है और अपने उन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति शोधकर्ता अपने कार्यों से एवम् मार्गदर्शन से करता है। इस प्रकार एक निश्चित दिशा ही उसके लिये उद्देश्यों को निर्धारित करती है।

निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु किया गया शोधकर्य ही सार्थक कहा जाता है। इस शोध कार्य के निम्न उद्देश्यों को निर्धारित किया गया है।

1. सेवा भारती के शिक्षा के क्षेत्र में संस्कार निर्माण संबंधित कार्यों का अध्ययन करना।
2. सेवा भारती के सामाजिक क्षेत्र में सेवा कार्यों का अध्ययन करना।
3. सेवा भारती के सामाजिक क्षेत्र में स्वावलम्बन के क्षेत्र में किये जा रहे कार्यों का अध्ययन करना।
4. सेवा भारती के सामाजिक समरसता संबधी कार्यो का अध्ययन करना।
5. राष्ट्र निर्माण में सेवा भारती की भूमिका का अध्ययन करना।

शोध का महत्व–

किसी भी राष्ट्र के विकास एवम् उसकी स्मृद्धि के लिये आवश्यक है कि वहां के लोग स्वस्थ, आत्मनिर्भर, शिक्षित एवम् संस्कारों से युक्त हो।

जब देश का प्रत्येक प्राणी, बच्चा, युवा एवम् महिला शिक्षित, आत्मनिर्भर, सक्षम, स्वस्थ एवम् उत्साह से परिपूर्ण होगा तो निश्चित रूप से देश विकास के पथ पर दौड़ेगा।

यदि इस शोध कार्य से देश निर्माण में कार्यों को करने में और हाथ जुड़ सके तो मैं अपने शोध को सार्थक समझूंगी। आज जहां चहूँ ओर हमें संवेदनहीनता दिखाई पड़ती है, जब सरे बाजार में असामाजिक तत्व किसी पर भी गोलियाँ दाग जाते है, जब एक चलती बस में निर्भया जैसे काण्ड हो जाते है। ऐसी परिस्थितियों में क्या कोई संगठन है, जो मानवीय मूल्यों से

परिपूर्ण, स्वार्थ रहित, परोपकार का ध्येय लेकर निरंतन कार्य कर रहा हो? जब इस दिशा में सेवा भारती का नाम आता है तो जानना आवश्यक हो जाता है कि वास्तविकता क्या है? क्या मूल में **'नर सेवा, नारायण सेवा'** का चिंतन है अथवा कुछ और।

इस सत्य को अपने शोध के माध्यम से सबके सम्मुख रख सकूं।

सेवा भारती द्वारा किये जा रहे कार्यों को वैज्ञानिक पद्धतियों से जाँच परख कर स्पष्ट रूप से पूर्ण समाज के सम्मुख रखने में यह शोध कार्य महत्वपूर्ण रहेगा।

शोध विधि–

शोध कार्य करने के लिये किसी न किसी विधि को अपनाना पड़ता है। सर्वेक्षण विधि अतिप्राचीन एवम् सर्वाधिक प्रचलित विधि है। **'सेवा भारती के कार्यों के विश्लेषणात्मक अध्ययन'** में विभिन्न प्रकल्पों को एवम् कार्यों का अवलोकन करना होगा। इस हेतु विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग उपयुक्त रहेगा।

शोध कार्य एक निश्चित चरण बद्ध कार्य है जिससे निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति की जा सकती है। यह एक क्रमबद्ध वैज्ञानिक प्रक्रिया है। प्रक्रिया के अन्तर्गत विभिन्न सेवा कार्यों को देखना, प्रकृति समझना एवम् उसका विश्लेषण करने में विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण विधि उपयुक्त रहेगी। अतः इसी विधि का चयन किया गया है।

संदर्भ कार्यों का अध्ययन–

सम्बन्धित शोध कार्य निम्नांकित हैः–

1. **लिली, पुष्पम (2003) ने – ''कोयम्बटुर में महिला अध्यापकों शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुष्टि''** शीर्षक पर एक शोधपत्र हेतु 725 अध्यापको पर शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृति का अध्ययन किया और पाया कि महिला अध्यापको की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर है, तथा

महिलाओं की कार्य सन्तुष्टि तथा शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृति में सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

2. **सिहं, सारनाथ और कुमार अनिल (2008) ने ''माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के जीवन मूल्यों की तुलना''** विषय पर शोधकार्य किया। माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के धार्मिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, प्रजातान्त्रिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, बौद्धिक मूल्य, पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य के क्रान्तिक अनुपात का मान सार्थक नहीं है।

3. **अमीर, अली (2006) ने ''सामाजिक संकुचन, समरसता और सुरक्षा निर्माण''** शीर्षक पर राष्ट्रीय एकता एवं मुस्लिम सामुदायिक समरसता निबन्धों की श्रृंखला हेतु शोध प्रस्तुत किया। आस्ट्रेलिया में मुस्लिम और गैर मुस्लिम समुदायों में 12 महीनों तक के शोध कर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया, इन्होंने सामाजिक समारसता एवं सुरक्षा बढ़ाने हेतु समाजिक एवं सातुदायिक उत्सवों एवं सामाजिक शिक्षा के उत्थान का आह्वान किया।

4. **चितरंजन, सांवत (2010) ने सामाजिक समरसता और नेतृत्व** शीर्षक पर शोध पत्र प्रस्तुत किया। इनके शोध का उद्देश्य एक अच्छे नेतृत्व में एक आदमी की तरह प्रेरक सौ समूहों का मार्गदर्शन और नेतृत्व कार्यक्रमों में समाजिक समरसता लाता है।

5. **विलियम ईस्टरली (2006) ने सामाजिक समरसता, संस्थान और वृद्धि** शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होने शोध में सामाजिक समरसता को मापने के साक्ष्यों में आय की असमानता और धार्मिक समानता और अन्तर्जातीय दृढ़ता संस्थागत समानता आदि मुख्य है। जिनमें आकस्मिक वृद्धि में परिवर्तन आता रहता है।

अध्ययीकरण
प्रथम अध्याय

1. परिचय–

''सेवा–भारती'' के कार्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन''

सेवा भारती एक विश्व स्तर पर सबसे बड़ी भारत की स्वयंसेवी संस्था है। इसकी स्थापना दिल्ली में 1978 में हुयी एवम् व्यापक स्तर पर 1988–89 में प्रकल्प स्थापित हुए। 1984 में राजस्थान में कार्यों का प्रारंभ हुआ एवम् 1987 में पंजीकृत संस्था बनी।

राजस्थान की राजधानी जयपुर के महेश नगर विस्तार कॉलोनी के अंतिम छोर की एक अभावग्रस्त, कचरा बीनने वाले, हरिजन लोग एवम् मजदूर वर्ग के लोग रहते है वहीं एक दो मंजिला भवन 'सेवा भारती' बाल विद्यालय एवम् हॉस्टल चलता है।

संचालिका श्रीमती विमला कुमावत से एक बार घूमते हुए कुछ वंचित बच्चों को अपने साथ ले जाते देखा तो उनके साथ हो ली – तभी सेवा भारती के विस्तृत कार्यों को जाना परंतु पूर्ण संतुष्टी नहीं हो पाई और इस अधूरी संतुष्टि ने ही मेरा शोध कार्य का विषय चयन में सहायता की।

1.1 प्रस्तावना–

भारतीय संस्कृति में मानव जीवन यात्रा के लिये चार पुरूषार्थों धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का पालन करते हुए सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करने की परम्परा रही है। हमारी प्राचीन सामाजिक व्यवस्था में भी चार वर्णो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ओर शूद्र को प्रमुख माना है। मध्यकाल में भारत के इस सामाजिक वर्ण व्यवस्था में विषमता उत्पन्न हो गई जिससे समाज में जातिगत भेदभाव, छुआछूत की स्थितियां बन गई। परिणामस्वरूप समाज के उपेक्षित, वंचित, अभावग्रस्थत लोगों का जीवन दुभर होता गया। समाज का स्वर्ण तबका इन लोगों को हेय दृष्टि से देखने लगा।

ऐसी स्थितियों में कंधे पर प्लास्टिक का बोरा लिए, पुराने चिथड़े शरीर पर लपटे हुए, नंगे पैर, बहती नाक और रूखे बालों में नन्हें बच्चों को कचरे के ढेर से कुछ बीनते हुए प्रातःकालीन सैर पर जाते समय कई बार मैंने देखा। मन उद्धेलित हो जाता, दिमाग घंटो परेशान रहता, तभी एक दिन एक साधारण सी दिखने वाली स्त्री जो कि पढ़ी लिखी एवम् संभ्रात परिवार से थी, ऐसे कचरा बीनने वाले बच्चों को रोककर उन्हें समझाते हुये देखा, तो मैं अपनी उत्सुकता रोक नहीं पायी। निकट जाकर मालूम किया तो पता चला कि यह महिला इन बच्चों से उनके बारे में जानकारी हासिल कर रही थी एवम् स्नेहिल हाथों से उन्हें सहला रही थी। यह देख मेरी उत्कंठा और बढ़ गई और मैं सैर छोड़ कर उस महिला के साथ हो ली। उस भद्र महिला का नाम विमला कुमावत था और वह इसी प्रकार जानकारी लेकर, फिर उन बच्चों के घर जाती उनके माता–पिता को विश्वास में लेती समझाती और अपने घर पढ़ाने हेतु ले आती। तब सेवा भारती नामक संस्था के प्रयासों से इन बच्चों को पढ़ाने के लिये स्थान प्रदान किया गया। आज यह एक बाल विद्यालय के रूप में करीबन 400 वंचित बच्चों के लिए निःशुल्क शिक्षा का केन्द्र बना हुआ है। सेवा भारती के कार्यों को अधिक समझने की जिज्ञासा ने ही मुझे अपने शोध का विषय **''सेवा भारती के कार्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन''** चुनने का नजरिया दिया। मुझे लगा कि इस शोध से मैं सामाजिक सरोकारों को एक माला में पिरोकर राष्ट्र के सम्मुख रख पाऊंगी।

वर्तमान प्ररिपेक्ष में जब देश में सेवा का स्थान, स्वार्थ भावना, संस्कारों के नाम पर स्वच्छंदता, बेहयायी, नग्नता, होड़, द्वेष, वैमनस्यता नशा आदि पनप रहे हैं। इस मानसिकता को बदलने का प्रयास एक ऐसा संगठन जो गैर सरकारी है केवल बातों से नहीं अपितु अपने सेवा कार्यों से कर रही है, सुन कर कुछ कौतूहल होता है जिसका निराकर मैंने अपने शोध से करना चाहा।

1.2 आवश्यकता एवम् महत्व–

किसी भी राष्ट्र के विकास एवम् उसकी स्मृद्धि के लिये आवश्यक है कि वहां के लोग स्वस्थ, आत्मनिर्भर, शिक्षित एवम् संस्कारों से युक्त हो।

जब देश का प्रत्येक प्राणी, बच्चा, युवा एवम् महिला शिक्षित, आत्मनिर्भर, सक्षम, स्वस्थ एवम् उत्साह से परिपूर्ण होगा तो निश्चित रूप से देश विकास के पथ पर दौड़ेगा।

सेवा भारती द्वारा किये जा रहे कार्यों को वैज्ञानिक पद्धतियों से जांच परख कर स्पष्ट रूप से पूर्ण समाज के सम्मुख रखने में यह शोध कार्य महत्वपूर्ण रहेगा।

1.3 औचित्य–

प्रत्येक मनुष्य जब जन्म लेता है तो एक ही प्रकार की आकृति व संरचना निश्चित हेाती है एवम् सभी बच्चे प्रायः समान योग्यता लिये हुये उत्पन्न होते हैं परन्तु जैसे जैसे वे बड़े होते जाते हैं उनमें समाज व बड़े लोग अन्तर का भाव उत्पन्न करने लगते हैं, उन नन्हें भोले बच्चों में भी भेदभाव, द्वेष, उच्चता–हीनता, अधिकारों व कर्तव्यों में भिन्नता का भाव उत्पन्न कर दिया जाता है जिससे बड़े होते होते भिन्नता की यह खाई बढ़ती जाती है। इस प्रकार के विचारों को मिटाने के लिए सभी के कार्यों को महत्व देने के लिए फिर चाहे वह ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र का कार्य क्यों न करता हो? समानता का भाव, एक दूसरे के प्रति सहयोग का भाव जागृत करने में सेवा कार्यों का औचित्य समझ आता है। यह शोधकार्य उन लोगों में सेवा कार्यों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव जगा सके, जिनकी सोच ऐसे कार्यों के प्रति सदैव नकारात्मक रही है। आज फैली इस नकारात्म्क सोच को बदलने की महती आवश्यकता है। अतः यह शोधकार्य सेवा भारती के मूल में जाकर उसके कार्यों को स्पष्ट कर पाने का एक प्रयास मात्र है।

वर्तमान में बहुत से सरकारी व गैर सरकारी संगठन समाज व देश हित में सेवा कार्यों का राग अलापते है एवम् मंच व मीडिया पर छाये रहते

है परंतु वास्तविकता के धरातल पर कौनसा संगठन है? जो दीन हीन से लेकर प्राणी मात्र के लिए यानी **वसुधैव कुटुम्बकम** की भावना से कार्य करते होगें, इस दृष्टि से सेवा भारती के कार्यों का अध्ययन इस शोध के औचित्य को स्वतः सिद्ध करता है।

1.4 परिसीमन–

समय एवम् उपलब्ध साधनों के कारण प्रत्येक शोध कार्य के लिए परिसीमन करना आवश्यक हो जाता है जिससे शोध कार्य से सार्थक उद्देश्यों की प्राप्ति हो सके। अतः इस शोधकार्य में अध्ययन की दृष्टि से निम्न प्रकार से परिसीमन किया गया है।

1. यह शोध कार्य जयपुर महानगर तक सीमित रखा गया है।
2. यह शोध कार्य सेवा भारती के शैक्षिक एवं सामाजिक कार्यो तक सीमित रखा गया है।
3. सेवा, संस्कार, स्वालम्बन एवम् समरसता से संबंधित प्रकल्पों तक सीमित रखा गया है।

1.5 प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्या–

- **शैक्षिक कार्य**

संस्कार

कुछ शब्दों में संस्कार को परिभाषित करना बहुत मुश्किल है। संस्कार शब्द मूलरूप से संस्कृत भाषा से है। दुनिया की कई मुख्य भाषाओं ने इस शब्दावली को अपने शब्दकोश में शामिल किया है। संस्कार का आशय है, अपने आंतरिक विवेक को रोशन करने, पूर्ण करने, परिष्कृत करने एवं शुद्ध करने के लिए सजाना। [1]

[1] http://sanskaramvatika.com/why.html

शुद्धि की धार्मिक क्रियाएं तथा व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक परिष्कार के लिए किये जाने वाले अनुष्ठान संस्कार कहलाते हैं। इस प्रकार संस्कार **मनुष्य को वास्तव में मनुष्य बनाता है**।[2]

- **समाजिक कार्य**

सेवा कार्य

वे सभी कार्य जिसे करने से दूसरे व्यक्ति (पीड़ित, अभावग्रस्त, वंचित, असहाय अथवा किसी भी प्रकार से हीन) को राहत मिलती हो सेवा कार्य कहलाते हैं। सेवा कार्यों से अन्य को शारीरिक आराम, मानसिक संतुष्टि, प्रोत्साहन, संबल, आत्म निर्भरता अथवा समानता का भाव उत्पन्न होता है।

सेवा 'सेव' शब्द से बना है अर्थात् सबकी सेवा, जो पतित है, मलिन देह है, फिर भी जो कार्य, पूजा भाव से करते हैं वह 'सेवा' है। (मतंग ऋषि) जहां सेवा करनी है वहां अगर अपनापन नहीं हुआ तो सेवा नहीं हो सकती। निःस्वार्थ सेवा के लिये सर्वोत्तम उदाहरण परिवार में 'माँ' का है। सभी सन्तो का यही आह्वान रहा है कि 'सेवा करो, सेवा करो और सेवा करो'। यही एक मार्ग है जिससे दुनिया में 'बन्धुत्व' की भावना बहेगी।

सेवा चरम मानवीय मूल्य है इसमें वही जुट सकता है, जिसमें अहं भाव ना हो। हृद्य उदार हो, चित्त में करूणा, दया, सहयोग आदि के भाव हों। अतः सेवा के लिए अनिवार्य तत्व है मानवीय करूणा।[3]

स्वावलम्बन

स्वयं की आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं के द्वारा कर सके उसे स्वावलम्बन कहते हैं। अर्थात् स्वः+अवलंबन, स्वयं पर निर्भर, आत्म निर्भरता को ही स्वावलंबन कहा गया है। स्वयं के कार्यों को करने में सक्षम हो वही स्वावलम्बन की योग्यता रखता है।

---

[2] मानव मूल्य–परक शब्दावली का विश्वकोश, पंचम खण्ड पेज संख्या 1885 मैनी. डॉ. धर्मपाल
[3] मानव मूल्य–परक शब्दावली का विश्वकोश, पंचम खण्ड पेज संख्या 2193 मैनी. डॉ. धर्मपाल

स्वावलम्बन की दो दिशाएं प्रमुख है। पहली दिशा पूर्ण स्वावलम्बन एवं दूसरी आंशिक स्वावलम्बन की है। यदि हम अपनी बुद्धि, शक्ति आदि क्षमताओं के अनुसार कार्य नहीं कर सकते हैं, तो हमारा स्वावलम्बन संधिग्ध है। [4]

समरसता

ऊंच–नीच रहित समाज–जहां प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को दूसरे के बराबर समझे, हीनता अथवा कुलीनता का विचार न हो, सभी समाज एक साथ बैठकर तीज त्यौहार मनायें, सुख–दुःख बाँटे एवम् एकजुट होकर आयी कठिनाइयों का सामना करें।

आपसी भाईचारा प्रेमभाव रखने को ही समरसता कहते हैं

.....गुरू गोविन्द

प्रो. रविकान्त सनाढ्य के अनुसार ''सामाजिक समरसता ही कौमी एकता की प्रबल संवाहक हो सकती है। इसलिए विद्यालयों में एन.एस.एस. एवं स्काउट का महत्वपूर्ण योगदान दे रहे है।''[5]

1.6 शोध विधि–

इस शोध कार्य में अवलोकन एवं विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया है।

1.7 प्रयुक्त उपकरण–

वह सामग्री जो किसी विशेष कार्यों को समझने में एवम् उसकी उपयोगिता जांचने में सहायक हो वह मापन का उपकरण कहलाती है। अच्छे उपकरणों में, वस्तुनिष्ठता, विश्वसनीयता, वैधता एवम् व्यावहारिकता आदि विशेषताएं होती हैं।

[4] मानव मूल्य–परक शब्दावली का विश्वकोश, पंचम खण्ड पेज संख्या 2275 मैनी. डॉ. धर्मपाल
[5] www.pressnote.in dated 01-03-2009

शोध में सारणीयन, विश्लेषण एवं व्याख्या की आवश्यकता रहती है। प्रस्तुत अध्ययन में उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए सर्वे द्वारा आंकड़ों के संकलन हेतु निम्नांकित उपकरणों का उपयोग किया जायेगा।

(अ) स्वयं निर्मित प्रश्नावली –

1. प्रकल्प संचालकों के लिए

2. प्रकल्प से जुडे समाज के लोगो हेतु

(ब) साक्षात्कार अनुसूची

1. प्रकल्प संचालकों के लिए

2. प्रकल्प से जुडे समाज के लोगो हेतु

1.8 न्यादर्श–

न्यादर्श में सेवा भारती की विभिन्न इकाईयों से लाभान्वित के रूप में जुड़े 200 पुरूष एवं 200 महिलाओं को समिलित किया जायेगा।

अध्याय द्वितीय–

संबंधित साहित्य का अध्ययन

1. **लिली, पुष्पम (2003) ने – ''कोयम्बटूर में महिला अध्यापकों शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुष्टि''** शीर्षक पर एक शोधपत्र हेतु 725 अध्यापको पर शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया और पाया कि महिला अध्यापको की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है। तथा महिलाओं की कार्य सन्तुष्टि तथा शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृति में सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।
2. **सिहं, सारनाथ और कुमार अनिल (2008) ने ''माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के जीवन मूल्यों की तुलना''** विषय पर शोधकार्य किया। माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के धार्मिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, प्रजातान्त्रिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, बौद्धिक

मूल्य, पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य के क्रान्तिक अनुपात का मान सार्थक नहीं है।

3. **अमीर, अली (2006) ने ''सामाजिक संकुचन, समरसता और सुरक्षा निर्माण''** शीर्षक पर राष्ट्रीय एकता एवं मुस्लिम सामुदायिक समरसता निबन्धों की श्रृंखला हेतु शोध प्रस्तुत किया। आस्ट्रेलिया में मुस्लिम और गैर मुस्लिम समुदायों में 12 महीनों तक के शोध कर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया, इन्होंने सामाजिक समारसता एवं सुरक्षा बढ़ाने हेतु समाजिक एवं सामुदायिक उत्सवों एवं सामाजिक शिक्षा के उत्थान का आह्वान किया।

4. **चितरंजन, सांवत (2010) ने सामाजिक समरसता और नेतृत्व** शीर्षक पर शोध पत्र प्रस्तुत किया। इनके शोध का उद्देश्य एक अच्छे नेतृत्व में एक आदमी की तरह प्रेरक सौ समूहों का मार्गदर्शन और नेतृत्व कार्यक्रमों में समाजिक समरसता लाता है।

5. **विलियम ईस्टरली (2006) ने सामाजिक समरसता, संस्थान और वृद्धि** शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होने शोध में सामाजिक समरसता को मापने के साक्ष्यों में आय की असमानता और धार्मिक समानता और अन्तर्जातीय दृढ़ता संस्थागत समानता आदि मुख्य है। जिनमें आकस्मिक वृद्धि में परिवर्तन आता रहता है।

तृतीय अध्याय–

सेवा भारती का परिचय (विहंग दृष्टि)

'सेवा भारती' अपने चार सूत्रों सेवा, संस्कार, स्वावलम्बन एवम् समरसता के साथ समाज के 'वंचित, उपेक्षित, अभावग्रस्थ साथियों के समुत्थान के लिये विभिन्न प्रकार के सेवा कार्य कर प्रकाश स्तम्भ का कार्य कर रही है। 1978 में दिल्ली में श्री विष्णु कुमार ने उपेक्षित बस्ती को पढ़ाने के माध्यम से बस्ती में संपर्क साधकर बस्ती के लोगों की समस्यायें समझ कर अन्यान्य प्रकार के सेवा कार्य करने के लिये सेवा भारती की

स्थापना की। 1988–89 में पूज्य श्री हेडगेवार जी की जन्म शताब्दी के समय अखिल भारतीय दृष्टि से सभी प्रान्तों में व्यापक रीति से सेवा कार्य प्रारंभ किये गये।

सेवा इन्टरनेशनल, आदि संस्थाएं भारत में चल रहे सेवा कार्यों को मदद करती है। यद्यपि राजस्थान में सेवा भारती का पंजीयन जुलाई 1987 में हुआ था। परन्तु सेवा कार्य का प्रारम्भ 1984 में ही चुका था।

आज विश्व स्तर पर सेवा भारती एक सबसे बड़ी 'स्वयं सेवी संस्था' है जिसके द्वारा प्राणी मात्र की सेवा कार्य सम्पन्न होते है। मानव सेवा का अर्थ कुछ वस्तु व धन से सहयोग कर देने से ही नहीं है अपितु जीवन में उत्साह, आत्मविश्वास, आत्म सम्मान का भाव जागृत कर स्वयं को सक्षम बनाने का संकल्प उत्पन्न करना भी बड़ा सेवा कार्य है।

इस तरह सेवा भारती, सेवा द्वारा मानव को उसके देवत्व के रूप में स्थापित करने का प्रयास कर रही है।

चतुर्थ अध्याय– सेवा भारती के शैक्षिक कार्य

सेवा भारती के संस्कार निर्माण संबंधित कार्य– बाल संस्कार केन्द्र, सेवा भारती बाल विद्यालय, यज्ञ, सत्संग आदि सेवा कार्यों में प्रतिदिन चलने वाले बाल विद्यालय एवम् संस्कार केन्द्र है एवम् यज्ञ, सत्संग आदि साप्ताहिक कार्य है। इनसे भारतीय संस्कारों को पोषित किया जाता है।

पंचम अध्याय– सेवा भारती के सामाजिक कार्य

सेवा कार्य हेतु कार्य

'सेवा भारती' विभिन्न प्रकार सेवा कार्य कर मानव मात्र के हृदय में अपना विशेष स्थान बनाने में सक्षम हुयी है। संस्था के सेवा कार्य इतने व्यापक हैं कि प्रत्येक का विस्तार से वर्णन कठिन है अतः कुछ प्रमुख सेवा कार्यों को निम्न रूप से जान सकते है।

बाल संस्कार विद्यालय, सेवा भारती बाल विद्यालय, कोचिंग केन्द्र, प्रतिभा सम्मान, स्वास्थ्य चेतना, कम्प्यूटर केन्द्र, सिलाई केन्द्र इत्यादि चिकित्सा केन्द्र, चिकित्सा शिविर, नेत्र ज्योति केन्द्र, न्यूरोथेरेपी केन्द्र, योग केन्द्र, निःशुल्क दवाई वितरण, चल चिकित्सालय, एम्बूलेंस, मुक्ति धाम, मातृ छाय केन्द्र, प्याऊ, भोजन शाला, चुग्गा केन्द्र, तुलसी पौध वितरण, पालनदार योजना, संस्कृति ज्ञान परीक्षा, स्वाइन फ्लू काढ़ा वितरण, कैदी सुधार, वृक्षारोपण इत्यादि।

स्वयं सहायता समूह, भजन मण्डली, सत्संग केन्द्र, सुन्दर काण्ड हनुमान चालीसा, यज्ञ हवन आदि।

स्वावलम्बन हेतु कार्य –

सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र – आर्थिक रूप से कमजोर, वंचित, एकल/विधवा व वंचित महिलाओं हेतु निःशुल्क सिलाई केन्द्र चलाये जाते हैं। जहां महिलाओं को सिलाई का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है एवम् स्वयं कार्य कर आत्म निर्भर बनने की प्रेरणा दी जाती है।

बहुत सी स्त्रियाँ सीख का सिलाई के पैसों की बचत कर लेती है एवम् कई स्वयं सिलाई का धंधा भी प्रारंभ कर लेती हैं जिससे वे आर्थिक रूप से सुदृढ़ एवं आत्म निर्भर हो सकती है।

स्वयं सहायता समूह – आर्थिक रूप से कमजोर महिलाएं एकत्रित होकर महीने के खर्च में से बचत कर पैसे संकलित करती है एवम् सामूहिकता में कोई कुटीर धंधा अथवा उद्योग धंधा कर लेती है फिर लागत के अनुपात में लाभ बांट लेती हैं। इस प्रकार स्वयं के द्वारा, स्वयं के कार्यों से स्वयं के लिए समूह बनता है उसे 'स्वयं सहायता समूह' कहा जाता है।

कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र – वंचित महिलाओं को कम्प्यूटर का निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जाता है एवम् उन्हें प्रमाण पत्र भी प्रदान किया जताा है जिससे वे कम्प्यूटर सेन्टर पर नौकरी प्राप्त कर सकती हैं अथवा किसी भी

कार्यालय में कम्प्यूटर पर कार्य करने का अवसर प्राप्त कर सकती है जहां उनहें वेतन दिया जाता है।

कोचिंग केन्द्र – इन केन्द्रों पर पिछड़े, वंचित व निर्धन छात्र छात्राओं को निःशुल्क कोचिंग दी जाती है जिससे वे भी प्रतियोगी परीक्षा पास कर नौकरियां प्राप्त कर सकें।

समरसता हेतु कार्य –

ऊंच–नीच रहित समाज–जहां प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को दूसरे के बराबर समझे, हीनता अथवा कुलीनता का विचार न हो, सभी समाज एक साथ बैठकर तीज त्यौहार मनायें, सुख–दुःख बाँटे एवम् एकजुट होकर आयी कठिनाइयों का सामना करें।

आपसी भाईचारा प्रेमभाव रखने को ही समरसता कहते हैं इस हेतु सत्संग, भजन, हनुमान चालिसा का साप्ताहिक पाठ, सुन्दरकाण्ड़ का साप्ताहिक पाठ्, कन्या पूजन, विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन एवं महापुरूषों की जयन्तियां व पुण्यतिथियों की आयोजना आदि है।

षष्ठम् अध्याय– राष्ट्र निर्माण में सेवा भारती भूमिका

इस अध्याय के अंतर्गत सेवा भारती की विभिन्न इकाईयों के कार्यो की समीक्षा एवं राष्ट्र निर्माण में उनके योगदान का अध्ययन किया जायेगा।

सप्तम् अध्याय– निष्कर्ष, भावी शोध हेतु सुझाव एवं क्रियात्मक योजना

इस अध्याय के अन्तर्गत निष्कर्ष, भावी शोध हेतु सुझाव के उपरांत समाज के सम्मुख एक क्रियात्म्क योजना तैयार करके प्रस्तुत की जा सकेगी ताकि वह योजना क्रियात्म्क रूप धारण कर भावी राष्ट्र निर्माण में किंचित मात्र भी योगदान कर सके तो मेरा यह शोधकार्य सार्थक होगा।

संदर्भ सूची

1. ‘छत्तीसगढ़ी संस्कार गीतों का अनुशीलन’ (2014)

अग्रवाल, सुलेखा ने आदिल सत्यभामा के निर्देशन में शोध कार्य किया।

2. 'Occupation, family, structure and styles of socialization'. The cases of clerks, traders and sailors (2013)

Katarya, Geeta ने Oomen TK के निर्देशन में 'ोध किया।

3. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका,

4. 'Cambating child labour in India': a study with special reference to contribution of UNO (2013) ने

Reddy GB के निर्देशन में यह शोध कार्य किया।

5. 'महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम एवं महिला जागरूकता मूल्यांकन समाज कार्य हस्तक्षेप' (2015)

संतोष कुमार यादव ने प्रो. ए.एन. सिंह के निर्देशन में शोध कार्य किया।

6. प्राथमिक शिक्षा के विकास की स्ट्रेटजी (2013)

A case study of Vizianagar distt. Andra Pradesh ने Gara Latchanna के निर्देशन में शोध किया।

7. 'Right of Equality and gender justice with special reference to women education in India' (2015)

Singh, Sanjay Kumar ने Singh, Shiv Sahai के निर्देशन में कार्य किया।

8. 'समान कार्य के समान वेतन' विशेषकर भारत एवम् यूके के संदर्भ में (2014)

अहमद मसूद ने जाहीरूद्दीन के निर्देशन में शोध कार्य किया।

9. 'Protective Legislation and equality of educational opportunity'. A study of the S.C. in the Punjab (2014)

Premi, Kusum K ने Nallagownden A N के निर्देशन में कार्य किया।

10. 'Education culture and health practices: Socialization and AIDS Awareness among students in Manipur (2013)

Singh, Nameirakpam Samungou ने Rao, Srinivasa के निर्देशन में उक्त शोध कार्य किया।

11. 'Child labour in India and Bangladesh' a comparative role of NGOs (2014)

    नारायण वीर ने लाम्बा महेन्द्र पी.के. निर्देशन में शोध कार्य किया।

12. 'The process of prison's reformation in Maharashtra:' A socio-regal study (2013)

    Dholam, Swarupan ने Vijay Marulkar के निर्देशन में उक्त शोध कार्य किया।

13. 'आर्थिक विकास में गैर सरकारी संगठनों की भूमिका', (2009) सेवा भारती के विशेष संदर्भ में।

    सेडूराम रैगर ने उक्त शोधकार्य प्रो. एम.एल. छीपा के निर्देशन में सम्पन्न किया।

शोध हेतु प्रस्तावित समय

1.	**प्रथम अध्याय**	3 माह
2.	**द्वितीय अध्याय**	3 माह
3.	**तृतीय अध्याय**	3 माह
4.	**चतुर्थ अध्याय**	3 माह
5.	**पंचम अध्याय**	3 माह
6.	**षष्ठम् अध्याय**	3 माह
7.	**सप्तम् अध्याय**	3 माह
8.	**टंकण एवं बाईडिंग**	3 माह

Outline of the synopsis approved

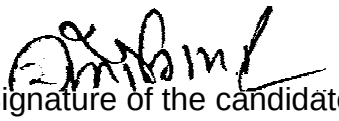

Signature of the candidate
Smt. Rakesh Mongia Kalra

Signature of supervisor with Date
Name – Dr. Dinesh Kumar

*****